साहित्य संहिता
Available at http://www.sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 01
January 2016

वो पल जो गहरी यादें दे जाएँ

नाम –आरती
पिता – श्री कर्म बीर
माता –श्रीमती सरोज शर्मा
शिक्षा – एम० ए०,(NET)

---------- वो पल जो गहरी यादें दे जाएँ ----------

--

ठड़ी सरसराती हवाओं में

झुलते पत्तों के साथ

खिलते फूलों की तरह

दुःखी मन का कोई कोना

शांति और सन्तोष

एक नई ताजगी से भर जाएँ

वो पल जो गहरी यादें दे जाएँ

--

जख़्म ऐसे इतने गहरे

जो सीने की जलन को

बेचैनी और कसमसाहट को

दर्द और घुटन को

पल–भर के लिए ही सही

भीनी तसल्ली के साथ

नन्ही उड़ान दे जाएँ

ओठों के पिछे हँसी की

नाजुक वजह दे जाएँ

वो पल जो गहरी यादें दे जाएँ

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 01
January 2016

--

जिसमें किसी के

भीगे पलकों के कोरो को देख

हम कुछ सिकुड़ जाएँ

पल–भर के लिए ठहर जाएँ

हमारी झुकी नजरें

किसी को गहरी ठंडक दे जाएँ

वो पल जो गहरी यादें दे जाएँ